टिप्पणी

209sk10

10

प्रहेलिका:

प्रहेलिका पहेली को कहते हैं। पहेली से आप सब परिचित हैं। यह ज्ञानवर्द्धन के साथ ही मनोरंजन का भी साधन है। अन्य भाषाओं की भाँति संस्कृत में भी यह शब्दों के साथ खेलने और गोष्ठियों में अपनी बुद्धिमत्ता प्रदर्शित करने का साधन रही है। पहेलियों में जान-बूझ कर ऐसे प्रश्न रखे जाते हैं जिससे सामने वाले की बुद्धि की परीक्षा हो सके। इसलिए प्रहेलिका का एक अर्थ है- कूटार्थप्रश्न, अर्थात् पेचीदे अर्थ के विषय में प्रश्न। इसमें पद्यों में कहीं एक अक्षर हटाकर, कहीं अक्षर बदल कर, तो कहीं अतिरिक्त अक्षर डाल कर प्रश्न किए जाते हैं। कहीं श्लोक के भीतर ही उत्तर दिया होता है जिसे अन्तरालाप कहते हैं। कहीं अनेक प्रश्नों का उत्तर एक ही शब्द में देना होता है। प्रस्तुत पाठ में हम नारायण राम आचार्य 'काव्यतीर्थ' द्वारा संपादित सुभाषित-रत्न-भाण्डागार से संकलित संस्कृत की कुछ प्रहेलिकाओं का अध्ययन करेंगे। इन्हें पढ़कर आप स्वयं देखेंगे कि प्रहेलिकाएँ किस प्रकार हमारा एक साथ ज्ञानवर्द्धन और मनोरंजन करती हैं।

उद्देश्यानि

इमं पाठं पठित्वा भवान्/भवती–

- स्वशब्दकोशे वृद्धिं करिष्यति;
- प्रहेलिकानाम् उत्तरं लेखिष्यति;
- गद्येन प्रहेलिका: प्रक्ष्यति;
- प्रहेलिकासु आगतानां द्व्यर्थकशब्दानाम् अर्थं लेखिष्यति;
- अन्वयेषु रिक्तस्थानपूर्तिं करिष्यति।

टिप्पणी

क्रियाकलापः 10.1

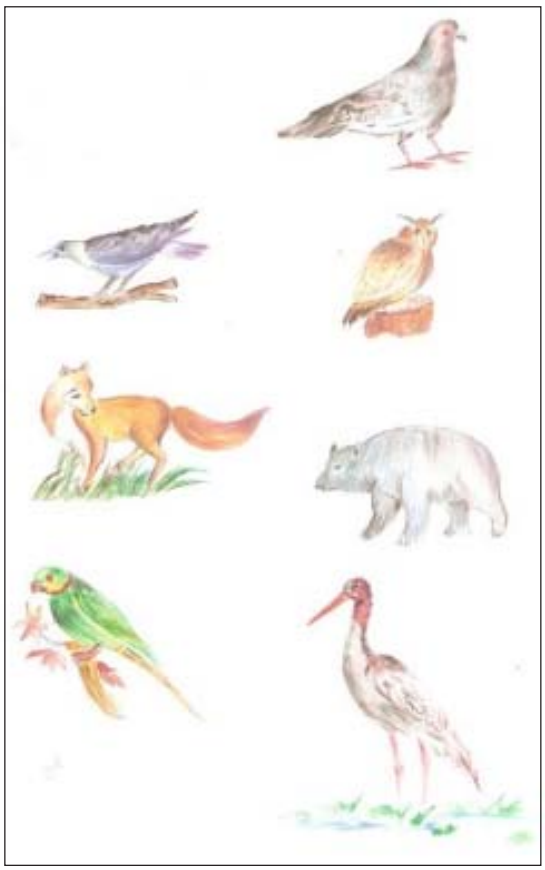

चित्र 10.1: विभिन्न पशुपक्षियों के चित्र

ऊपर कुछ पशु-पक्षियों के चित्र दिए गए हैं। उनसे संबंधित पहेलियों का स्मरण कीजिए। तथा उनके माध्यम से दी जाने वाली उनकी शिक्षाओं के बारे में लिखिए।

1. .....

2. .....

3. .....

10.1 इदानीं मूलपाठं पठामः

प्रथमः एकांशः

1. अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः।
   अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः॥1॥

शब्दार्थाः
अपदः = बिना पैर वाला, दूरगामी = दूर जाने वाला, साक्षरः = अक्षरों से युक्त/पढ़ा लिखा, अमुखः = बिना मुख वाला, + स्फुटवक्ता = स्पष्ट बोलने वाला, केशवं

टिप्पणी

= जल में शव को, श्रीकृष्ण को, द्रोण: = काला कौआ, द्रोणाचार्य, कौरवा: =शृगाल, कौरव, वृक्षाग्रवासी = वृक्ष पर रहने वाला, पक्षिराज: = गरुड़, त्रिनेत्रधारी = तीन आँखों वाला, शूलपाणि: = शिव (शूल है जिनके हाथ में), त्वग्वस्त्रधारी = छाल के कपड़े पहनने वाला, सिद्धयोगी = सिद्ध तपस्वी, बिभ्रत् = धारण करता हुआ, भूपानाम् = राजाओं का, दीयताम् = दीजिए, प्रबोधयति = खिलाता है, निहन्ति = नष्ट करता है। तक्रं = छाछ, मट्ठा, संजघान = मारा, दारपोषणरता: = पत्नी के पालन में लगे हुए, केदाराणां = क्यारियों के, सीमन्तिनीषु = स्त्रियों में, वन्द्या = पूजनीय, उक्तम् = कह दिया गया है।

2. केशवं पतितं दृष्ट्वा द्रोणो हर्षमुपागत:।
   रुदन्ति कौरवा: सर्वे हा केशव! कथं गत:।।

3. वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजस्त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणि:।
   त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी जलं च बिभ्रत् न घटो न मेघ:।।3।।

4. किमिच्छति नर: काश्यां भूपानां को रणे हित:।
   को वन्द्य: सर्वदेवानां दीयतामेकमुत्तरम्।।4।।

5. आनन्दयति कोऽत्यर्थं सज्जनानेव भूतले।
   प्रबोधयति पद्मानि तमांसि च निहन्ति क:।।5।।

द्वितीय: एकांश:

6. भोजनान्ते च किं पेयं जयन्त: कस्य वै सुत:।
   कथं विष्णुपदं प्रोक्तं तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्।।6।।

7. कं संजघान कृष्ण: का शीतलवाहिनी गंगा।
   के दारपोषणरता: कं बलवन्तं न बाधते शीतम्।।7।।

8. सीमन्तिनीषु का शान्ता राजा कोऽभूद् गुणोत्तम:।
   विद्वद्भि: का सदा वन्द्या अत्रैवोक्तं न बुध्यते।।8।।

बोधप्रश्ना:

1. **पाठं पठित्वा 'अ' स्तम्भस्य श्लोकांशान् 'ब' स्तम्भस्य श्लोकांशै: सह मेलयत-**

अ	ब
(क) प्रबोधयति पद्मानि	(1) हा! केशव कथं गत:
(ख) आनन्दयति कोऽत्यर्थम्	(2) का शीतलवाहिनी गङ्गा
(ग) केशवं पतितं दृष्ट्वा	(3) कं बलवन्तं न बाधते शीतम्
(घ) रुदन्ति कौरवा: सर्वे	(4) तमांसि च निहन्ति क:
(ङ) कं संजघान कृष्ण:	(5) सज्जनानेव भूतले
(च) के दारपोषणरता:	(6) द्रोणो हर्षमुपागत:

टिप्पणी

2. **अधोलिखितेषु रिक्तस्थानां पूर्तिं कुरुत-**

(i) त्रिनेत्रधारी .....।

(ii) विद्वद्भिः का .....।

(iii) ..... किं पेयम्।

(iv) अमुखः ..... साक्षरो न च .....।

(v) को वन्द्यः .....।

10.2 अधुना पाठम् अवगच्छामः

10.2.1 प्रथमः एकांशः

01 श्लोकतः ..... 05 पर्यन्तम्

अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः।
अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः।।1।।

अन्वयः

अपदः दूरगामी च, साक्षरः च पण्डितः न अमुखः (अपि) स्फुटवक्ता च यः जानाति सः पण्डितः।

व्याख्याः

1. अपदो दूरगामी च- जिसके पैर नहीं होते, वह कहीं जा नहीं सकता। किन्तु यहाँ जिसके विषय में बात की जा रही है, वह पैर न होने पर भी दूर दूर तक जाता है।

   साक्षरो न च पण्डितः- अक्षर से युक्त होने पर भी वह पण्डित नहीं है।

   अमुखः स्फुटवक्ता च- मुख न होने पर भी वह अपनी बात स्पष्ट रूप से कह देता है।

   यो जानाति स पण्डितः- जो इसे जानता है वही पण्डित है।

   क्या आप इस पहेली का उत्तर जानते हैं? यदि हाँ तो शीघ्र बतलाइये। पण्डित कहलाये जाने का अवसर चूकिये मत। जी हाँ, आप ठीक समझे हैं। जिसके विषय में ये प्रश्न हैं वह है पत्र। बिना पैर के भी पत्र दूर-दूर तक पहुँच जाता है। वह साक्षर भी है। साक्षर का अर्थ है शिक्षित किन्तु साक्षर का एक अन्य अर्थ भी है 'जो अक्षरों से युक्त हो' पत्र पर अक्षर लिखे हुए होते हैं अतः वह साक्षर है। पत्र का मुख नहीं है किन्तु आपके संदेश को वह स्पष्ट रूप में पहुँचा देता है।

टिप्पणी

भावार्थ:

अत्र प्रहेलिकाया: माध्यमेन पत्रस्य वर्णनं कृतम्। पत्राणि चरणाभावेऽपि दूर गच्छन्ति, अथ च अक्षरेणु अङ्कितम् अभिप्रायं स्फुटतया प्रकाशयन्ति।

व्याकरणबिन्दव:

समास:

अपद: = अविद्यमानानि पदानि यस्य स: (बहुव्रीहि:)

दूरगामी = दूरं गच्छति तच्छील: (उपपदतत्पुरुषसमास:)

अमुख: = न विद्यते मुखं यस्य स: (बहुव्रीहि:)

स्फुटवक्ता = स्फुटं वक्ति (उपपदतत्पुरुषसमास:)

प्रत्यया:

दूरगामी = दूर + गम् धातु, णिनि प्रत्यय (ताच्छीलत्व अर्थ में) पुं. प्रथमा, एकव.

स्फुटवक्ता = स्फुट + वच् धात्, तृच् प्रत्यय (कर्ता अर्थ में), प्रथमा, एकव.,

जानाति = ज्ञा, धातु लट्लकार, प्र.पु. एकव. (जा) तिप् प्रत्यय ज्ञा धातु क्रयादिगण में पठित है अत: ज्ञा एवं ति के बीच में 'श्ना' विकरण आ जाता है तथा ज्ञा धातु को जा आदेश हो जाता है।

केशवं पतितं दृष्ट्वा द्रोणो हर्षमुपागत:।
रुदन्ति कौरवा: सर्वे हा! केशव: कथं गत:।।

अन्वय:

1. केशवम् पतितम् दृष्ट्वा द्रोण: हर्षम् उपागत:। सर्वे कौरवा: हा! केशव: कथम् गत: इति रुदन्ति।
2. के शवं पतितं दृष्ट्वा द्रोण: (काक:) हर्षम् उपागत:।

   सर्वे कौरवा: (शृगाला:) हा! के शव: कथं गत: इति रुदन्ति।

व्याख्या:

केशवं पतितं दृष्ट्वा- केशव (श्रीकृष्ण) को गिरा हुआ देखकर एवं श्लिष्ट पद 'केशवं' को अलग करने से (के शवं) का अर्थ जल में मृतक शरीर का होना।

द्रोण: हर्षम् उपागत:- द्रोणाचार्य प्रसन्न हुए एवं श्लिष्ट पद 'द्रोण:' का दूसरा अर्थ काला कौआ होने से कौआ प्रसन्न हुआ, ऐसा अर्थ होगा।

टिप्पणी

सर्वे कौरवाः रुदन्ति- 'कौरव रो रहे हैं' और श्लिष्ट पद 'कौरवाः' का दूसरा अर्थ 'शृगालाः' होने से गीदड़ रो रहे हैं।

हा! केशवः कथं गतः- केशव हाय! कैसे चले गये एवं हाय! (के शवः) जल में मृतक शरीर कैसे गया?

इस पहेली का उत्तर जानने का प्रयास कीजिए। यदि नहीं जान सके हैं तो फिर समझने की कोशिश कीजिएः- इस पहेली का शुद्ध भावयुक्त अर्थ ही उत्तर है। इसके दो अर्थ हैं जिसमें पहले अर्थ से भाव का पूर्ण स्पष्टीकरण नहीं हो पाता है। अस्तु; दूसरे अर्थ का समावेश होता है। जैसे- महाभारत युद्ध में भगवान श्रीकृष्ण को गिरे हुए देखकर द्रोणाचार्य प्रसन्न हो गए परन्तु सभी कौरव रोने लगे कि हाय केशव! आप क्यों गए। जो उपयुक्त प्रतीत नहीं हो रहा है। इसलिए दूसरे अर्थ का समावेश किया गया कि के शवं जल में मृतक शरीर को देखकर द्रोण (कौआ) प्रसन्न हो रहा है और (कौरव) गीदड़ रो रहे हैं कि जल में मृतक शरीर कैसे चला गया।

भावार्थः

अत्र कविना 'केशवम्', केशवः, द्रोणः, कौरवाः इति पदेषु श्लेषालङ्कारः प्रयुक्तः केशवम् अर्थात् श्रीकृष्णं पतितं दृष्ट्वा द्रोणाचार्यः प्रसन्नः जातः। किन्तु दुर्योधनादयः कौरवाः रुदन्ति इति अर्थः न सङ्गच्छते। द्वितीयः अर्थस्तु के जले शवं पतितं दृष्टवा द्रोणः अर्थात् कृष्णः काकः प्रसन्नों भवति किन्तु कौरवाः अर्थात् शृगालाः रुदन्ति यतोहि तेषां जले गतिः न भवति।

व्याकरणबिन्दवः

पतितं - पत् धातु + क्त प्रत्यय, पुँल्लिङ्ग, द्वितीया एकव.

दृष्ट्वा- दृश् धातु + क्त्वा प्रत्यय, अव्यय,

उपागतः- उप+आ+गम् धातु + क्त प्रत्यय, पुँल्लिङ्ग, प्रथमा एकव.

रुदन्ति- रुद् धातु, लट् लकार, प्रथम पुरुष बहुव.

गतः - गम् धातु + क्त प्रत्यय, पुँल्लिङ्ग, प्रथमा एकव.

वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजस्त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः।
त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी जलं च बिभ्रत् न घटो न मेघः।।3।।

अन्वयः

वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः, त्रिनेत्रधारी शूलपाणिः च न, त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी, जलं च बिभ्रत् घटः न मेघः न।

टिप्पणी

प्रहेलिका:

व्याख्या:

वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराज:- इस प्रहेलिका में जिसकी चर्चा की जा रही है, वह वृक्ष के अग्रभाग में अर्थात् वृक्ष की चोटी पर रहता है। क्या वह पक्षियों का राजा गरुड है? जी नहीं।

त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणि:- वह तीन नेत्रों वाला है। तब तो वे त्रिशूलधारी शिव होंगे। नहीं, वह शिव नहीं है।

त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी- तपस्वी प्राय: वृक्षों की छाल के वस्त्र (वल्कल) धारण करते हैं किन्तु छाल के वस्त्र धारण करने पर भी वह कोई योगी अथवा तपस्वी नहीं है।

जलं च बिभ्रत् न घटो न मेघ:- वह जल धारण करता हैं फिर तो वह घड़ा होगा। जी नहीं, तो क्या जलधारण करने वाला वह बादल है? जी नहीं, वह बादल भी नहीं है।

फिर वह है क्या? सोचिए और बताइये। हाँ, आपने ठीक कहा। वह है- नारिकेल अर्थात् नारियल। नारियल वृक्ष की चोटी पर लगता है। उस पर आँखों जैसे तीन चिह्न बने हुए होते हैं इसलिए वह त्रिनेत्रधारी भी है। जैसे योगी पेड़ की छाल अर्थात् वल्कल वस्त्र धारण करते हैं वैसे ही नारियल पर भी छाल होती है। घड़े और बादल की भाँति जल से पूर्ण होते हुए भी वह इन दोनों से भिन्न है।

भावार्थ:

अत्र प्रहेलिकाया: माध्यमेन नारिकेलफलस्य स्वरूपं स्पष्टीकृतम् यत् तत् वृक्षाग्रे अति दूरे भवति, तस्मिन् त्रीणि नेत्राणि इव अङ्कितानि भवन्ति, तस्यउपरि कठिनं त्वग् भवति अन्तश्च तत् मधुरं जलं धारयति।

व्याकरणबिन्दव:

सन्धिविच्छेद:

चैव	=	च	+	एव
साक्षर:	=	स	+	अक्षर:
वृक्षाग्रवासी	=	वृक्ष	+	अग्रवासी
बिभ्रन्न	=	बिभ्रत्	+	न
पक्षिराजस्त्रिनेत्रधारी	=	पक्षिराज:	+	त्रिनेत्रधारी

पद-परिचयः

बिभ्रत् = भृ धातु + शतृ प्रत्यय, पुल्लिंग, प्रथमा एकव.

समासः

वृक्षाग्रवासी = वृक्षस्य अग्रम् वृक्षाग्रम् (षष्ठीतत्पुरुषः)

वृक्षाग्रे वस्तुं शीलं यस्य सः (उपपदतत्पुरुषः)

पक्षिराजः = पक्षिणां राजा (षष्ठीतत्पुरुषसमासः) पक्षिराजा + टच् प्रत्यय, त्रिनेत्रधारी = त्रीणि नेत्राणि धरते तच्छीलः (उपपदतत्पुरुषसमासः) + णिनि प्रत्यय, त्वगवस्त्रधारी = त्वग्रूपं वस्त्रं धरते तच्छीलः (उपपदतत्पुरुषसमासः) + णिनि प्रत्यय सिद्धयोगी = सिद्धश्चासौ योगी च (कर्मधारयतत्पुरुषः)

शूलपाणिः- = शूलं पाणौ यस्य सः शूलपाणिः। (बहुव्रीहिसमासः)

अगली दो प्रहेलिकाएँ बहिरालाप की श्रेणी में आती हैं। यहाँ प्रत्येक श्लोक में अनेक प्रश्न किये गए हैं, जिनका उत्तर एक शब्द में ही छिपा हुआ है। उसी शब्द को अनेक प्रकार से तोड़कर उन प्रश्नों के उत्तर निकलते हैं, जैसा हम नीचे देखेंगे।

किमिच्छन्ति नराः काश्यां भूपानां को रणे हितः।
को वन्द्यः सर्वदेवानां दीयतामेकमुत्तरम्।।4।।

अन्वयः

नराः काश्याम् किम् इच्छन्ति? रणे भूपानाम् कः हितः? सर्वदेवानाम् वन्द्यः कः? एकम् उत्तरम् दीयताम्।

व्याख्याः

यहाँ तीन प्रश्न किए गए हैं: काशी में लोग क्या चाहते हैं, युद्धक्षेत्र में राजाओं के लिए हितकर क्या है और सभी देवताओं द्वारा वन्दनीय कौन है? इन तीनों प्रश्नों का उत्तर एक ही शब्द द्वारा देना है। उस शब्द में तीनों प्रश्नों का उत्तर होना चाहिए। बताइये, वह शब्द कौन सा है? नहीं बता सके न! हम बताते हैं। इसका उत्तर है- 'मृत्युञ्जयः'। पहले प्रश्न का उत्तर है - 'मृत्युम्'। भारतीय परम्परा के अनुसार मनुष्य काशी में मृत्यु की इच्छा रखता है। कहा भी है- 'काश्यां हि मरणान्मुक्तिः'।

दूसरा प्रश्न है- युद्ध में राजाओं के लिए हितकर क्या है? इसका उत्तर है- 'जयः' अर्थात् विजय। तीसरे प्रश्न कि सभी देवताओं का वन्दनीय कौन है? इस प्रश्न का उत्तर इन दोनों शब्दों को मिलाने से बनता है। यह उत्तर है- 'मृत्युञ्जयः' अर्थात शिव। शिव सभी देवताओं के लिए पूज्य हैं। इसीलिए तो उन्हें महादेव कहा गया है।

टिप्पणी

भावार्थ:

अत्र त्रयाणां प्रश्नानां एकमेव 'मृत्युञ्जय:' इति उत्तरं भवति। 'मृत्युञ्जय:' इति पदमपि द्विधा विभज्यते-'मृत्युम्' + 'जय:' इति

प्रश्न:

1. जना: काश्यां किमिच्छन्ति?

उ. मृत्युम्

2. युद्धे राज्ञां हितकरं किम्?

उ. जय:

3. सर्वेषां देवानां वन्द्य:

क: मृत्युञ्जय: = शिव:

पदपरिचय

काश्याम् = काशी + सप्तमी एकव.

भूपानाम् = भूप + षष्ठी बहुव.

आनन्दयति कोऽत्यर्थं सज्जनानेव भूतले।
प्रबोधयति पद्मानि तमांसि च निहन्ति क:।।5।।

अन्वय:

क: भूतले सज्जनान् अत्यर्थम् आनन्दयति एव? क: पद्मानि प्रबोधयति तमांसि च निहन्ति?

व्याख्या:

यहाँ दो प्रश्न हैं- पृथ्वी पर सज्जनों को अत्यधिक आनन्द कौन देता है? कौन कमलों को खिलाता है और अन्धकार को नष्ट करता है? दोनों का एक ही उत्तर है- 'मित्रोदय:'। मित्रोदय अर्थात् मित्रों की समृद्धि से सज्जनों को अत्यन्त आनन्द मिलता है। 'मित्र' शब्द का एक अर्थ सूर्य भी होता है। सूर्य उदय होने पर ही कमल खिलते हैं और अन्धकार नष्ट होता है। कमलों को खिलाने वाला और अन्धकार को नष्ट करने वाला भी मित्रोदय अर्थात् सूर्य का उदय ही है।

इस प्रकार इन दोनों पहेलियों में श्लेष के बल पर, एक ही शब्द से अनेक प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं। श्लेष का अर्थ है- भिन्न-भिन्न अर्थ वाले। भिन्न-भिन्न शब्द जब एक शब्द के रूप में उच्चारित होकर (एक ही शब्द से) दो या अधिक अर्थों का कथन करते हैं तो

टिप्पणी

श्लेष अलङ्कार होता है। जैसे 'मित्रोदय' में 'मित्र' शब्द यहाँ दो अर्थ वाला है, एक मित्र का वाचक तथा एक सूर्य का वाचक, किन्तु दोनों एक रूप में ही उच्चरित होकर एक ही शब्द बन जाते हैं। इस प्रकार प्रथम प्रश्न के उत्तर में 'मित्रोदय' का अर्थ है- मित्रों की उन्नति या समृद्धि। दूसरे प्रश्न के उत्तर में 'मित्रोदय' का अर्थ है- सूर्योदय।

व्याकरणबिन्दवः

सन्धिविच्छेदाः

को वन्द्यः - कः + वन्द्यः, कोऽत्यर्थम् - कः + अति + अर्थम्

पदपरिचयः

आनन्दयति = आ + नन्द् + णिच् (प्रेरणार्थक) + लट्लकार, प्र. पु., एकव.।

प्रबोधयति = प्र + बुध् धातु + णिच् प्रत्यय (प्रेरणार्थक) + लट्लकार, प्र. पु., एकव.।

तमांसि = तमस् + द्वितीया, बहुवचन

पद्मानि = पद्म + द्वितीया, बहुवचन

निहन्ति = नि + हन् + लट्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

पाठगतप्रश्नाः 10.1

1. **अधोलिखितप्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत-**

(i) कौरवाः किं कुर्वन्ति?

.....

(ii) घटः किं धारयति?

.....

(iii) सर्वदेवानां कः वन्दनीयः?

.....

(iv) कः कमलानि विकासयति?

.....

टिप्पणी

(v) के मित्रस्य उदये प्रसन्ना: भवन्ति?

.....

2. 'क' स्तम्भस्य शब्दान् 'ख' स्तम्भस्य अर्थै: सह मेलयत-

'क'	'ख'
(अ) अपद:	(i) काक:
(आ) साक्षर:	(ii) नाशयति
(इ) द्रोण:	(iii) चरणविहीन:
(ई) पक्षिराज:	(iv) शिव:
(उ) शूलपाणि:	(v) अक्षरै: युक्त:
(ऊ) रणे	(vi) गरुड:
(ऋ) निहन्ति	(vii) युद्धे

10.2.2 द्वितीय: एकांश:

06 श्लोकत: ..... 08 पर्यन्तम्

इस एकांश में अन्तरालाप-विषयक प्रहेलिकाएं हैं। अन्तरालाप का अर्थ है कि पहेली में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर भी पहेली के भीतर ही बताया गया रहता है। स्वयं उत्तर खोजने का प्रयास करें। न खोज सकें तो आगे की व्याख्या देखें।

भोजनान्ते च किं पेयं जयन्त: कस्य वै सुत:।
कथं विष्णुपदं प्रोक्तं तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्।।6।।

अन्वय:

6. भोजनान्ते च किं पेयम्? जयन्त: वै कस्य सुत:? विष्णुपदं कथं प्रोक्तम्? तक्रं शक्रस्य (अपि) दुर्लभम् (भवति)।

व्याख्या:

प्रथम तीन पदों में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर चौथे पद में ही है। पहले प्रश्न का उत्तर चौथे पाद का प्रथम शब्द है। इसी प्रकार चौथे पाद का दूसरा और तीसरा शब्द क्रमश: दूसरे और तीसरे प्रश्न का उत्तर है। पहला प्रश्न है- भोजन के अंत में क्या पीना चाहिए? उत्तर है- छाछ या मट्ठा (तक्रम्)। आयुर्वेद में छाछ को स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम पेय माना गया है। दूसरा प्रश्न है- जयन्त किसका पुत्र है? उत्तर है -'शक्रस्य' अर्थात शक्र (इन्द्र) का।

तीसरा प्रश्न है- विष्णु का स्थान कैसा है? उत्तर है- दुर्लभम्। बड़े-बड़े योगियों के लिए भी विष्णुपद की प्राप्ति दुर्लभ है। यद्यपि यह चौथा पाद स्वतन्त्र वाक्य जैसा प्रतीत होता है, जिसका अर्थ होगा- 'छाछ इन्द्र के लिए भी दुर्लभ है।' किन्तु वस्तुतः इस पाद के तीनों शब्द क्रमशः पहले, दूसरे और तीसरे प्रश्न के उत्तर हैं।

भावार्थः

अत्र प्रहेलिकायाः माध्यमेन तक्रस्य औषधीयं महत्त्वं ख्यापितं वर्तते। अथ च विष्णुपदस्य अर्थात् मोक्षस्य दुर्लभत्वमपि सूचितम्

कं संजघान कृष्णः का शीतलवाहिनी गङ्गा।
के दारपोषणरताः कं बलवन्तं न बाधते शीतम्।।7।।

7. (क) प्रश्न- कं संजघान कृष्णः?

उत्तर - कंसं जघान कृष्णः।

(ख) प्रश्न- का शीतलवाहिनी गङ्गा?

उत्तर - काशीतलवाहिनी गङ्गा?

(ग) प्रश्न- के दारपोषणरताः?

उत्तर- केदारपोषणरताः।

(घ) प्रश्न- कं बलवन्तं न बाधते शीतम्?

उत्तर- कम्बलवन्तं न बाधते शीतम्।

व्याख्याः

जैसा आपने देखा, इस श्लोक में प्रश्न-वाक्य में ही उत्तर छिपा हुआ है। प्रश्न-वाक्य को दूसरे ढंग से पढ़ने पर उत्तर मिल जाता है। पहला प्रश्न है- कं संजघान कृष्णः? अर्थात् कृष्ण ने किसका वध किया? उत्तर है- कंसं जघान कृष्णः। अर्थात् कृष्ण ने कंस का वध किया। दूसरा प्रश्न है- का शीतलवाहिनी गङ्गा? अर्थात् शीतल प्रवाहवाली गङ्गा कौन सी है? उत्तर है- काशीतलवाहिनी गङ्गा। अर्थात् काशी के तल पर बहने वाली गंगा शीतल है। तीसरा प्रश्न है- के दारपोषणरताः? अर्थात कौन लोग अपनी दारा (पत्नियों) के पालनपोषण में संलग्न हैं? उत्तर है- केदारपोषणरताः। अर्थात वे लोग जो अपने खेतों की क्यारियों (केदार) के पालन में संलग्न हैं क्योंकि अपने खेतों की देखभाल करने वाले लोग ही धन-धान्य प्राप्त कर पत्नियों के और अपने कुटुम्ब के पालन-पोषण में समर्थ होते हैं। चौथा प्रश्न है- कं बलवन्तं न बाधते शीतम्? अर्थात् किस बलवान् को सर्दी नहीं सताती? उत्तर है- कम्बलवन्तं न बाधते शीतम्। कम्बल से युक्त व्यक्ति को सर्दी नहीं सताती।

टिप्पणी

भावार्थ:

अत्त कृष्ण: कंसस्य वधं कृतवान् इति इतिहास: सूचित:। काश्या: गङ्गायाश्च महत्त्वम् अधिकम् अस्ति। उत्तमा: कृषकास्ते एव ये केदारेषु सम्यक धान्यम् उत्पादयन्ति सर्वेषां पोषणं च कुर्वन्ति।

सीमन्तिनीषु का शान्ता राजा कोऽभूद् गुणोत्तम:।
विद्वद्भि: का सदा वन्द्या अत्रैवोक्तं न बुध्यते।।8।।

अन्वय:

सीमन्तिनीषु शान्ता का? गुणोत्तम: राजा क: अभूत्? विद्वद्भि: सदा वन्द्या का? अत्र एव उक्तम्, न बुध्यते।

व्याख्या:

इस प्रहेलिका के सभी उत्तर यहीं छिपे हुए हैं। इसीलिए कहा है कि यहीं बता दिया गया है, फिर भी मालूम नहीं पड़ता। इसकी कुंजी इस प्रकार है। इस प्रहेलिका के प्रत्येक चरण के प्रथम और अन्तिम अक्षर में ही उत्तर छिपा हुआ है। इस कुंजी के आधार पर उत्तर खोजेंगे तो कोई कठिनाई नहीं होगी। तीन प्रश्न इस प्रकार हैं- स्त्रियों में कौन सी शान्त स्त्री है? गुणों से उत्तम राजा कौन हुआ? और विद्वानों के द्वारा सदा पूज्य कौन है? अब इन्हीं वाक्यों में उत्तर देखिए- सीमन्तिनीषु का शान्ता - 'सीता'। राजा कोऽभूद् गुणोत्तम: - 'राम:'। विद्वद्भि: का सदा वन्द्या। 'विद्या'। पूरे श्लोक के चार चरण हैं। पहले तीन चरणों में क्रमश: तीन प्रश्न किए गये है। प्रत्येक चरण के पहले और अन्तिम वर्ण को मिलाने से उसी चरण में पूँछें गये प्रश्न का उत्तर सरलता से प्राप्त हो जाते हैं।

भावार्थ:

प्रहेलिकाया: माध्यमेन सीताया: रामस्य च शान्तत्वात उत्तम गुणयुक्त त्वाच्च प्रशंसा कृता वर्तते। अस्मिन् प्रसङ्गे विद्याया अपि वन्दनीयत्वं प्रकाशितम्।

व्याकरणबिन्दव:

सन्धिविच्छेदा:

भोजनान्ते = भोजन + अन्ते

प्रोक्तम् = प्र + उक्तम्

कोऽभूत् = कः + अभूत्

गुणोत्तमः = गुण + उत्तमः

अत्रैवोक्तम् = अत्र + एव + उक्तम्

पदपरिचयः

बुध्यते = बुध् धातु यक् प्रत्यय, (कर्मवाच्य) लट्लकार, प्र.पु., एकव.

बाधते = बाध् धातु लट्लकार, (आत्मनेपद) प्र. पु., एकव.

विद्वद्भिः = विद्वस् + पुं., तृतीया वि., बहुव.

बलवन्तम् = बलवत् + पुं. द्वितीया, एकव.

समासाः

विष्णुपदम् = विष्णोः पदम् (षष्ठीतत्पुरुषः)

शीतलवाहिनी = शीतलं वोढुं शीलं यस्याः सा (बहुव्रीहिः)

काशीतलवाहिनी = काशीतले वहति तच्छीला, उपपदसमास

दारपोषणरताः = दाराणां पोषणम् दारपोषणम् (षष्ठीतत्पुरुषः)

दारपोषणे रताः (सप्तमीतत्पुरुषः)

भोजनान्ते = भोजनस्य अन्ते (षष्ठीतत्पुरुषः)

पाठगतप्रश्नाः 10.2

1. **संस्कृतेन उत्तरत-**

(i) तक्रं कस्य अन्ते पेयम्?

.....

(ii) इन्द्रः कस्य पिता?

.....

(iii) दुर्लभपदं किं प्रोक्तम्?

.....

(iv) कंसं कः हतवान्?

....

(v) कम्बलवन्तं किं न बाधते?

....

(vi) विद्या कैः वन्द्या?

....

2. अधोलिखितविशेष्यैः सह विशेषणानि योजयत–

	विशेषणानि	विशेष्याणि
(i)	....	गंगा
(ii)	....	कृषकाः
(iii)	....	जनम्
(iv)	....	नारी
(v)	....	रामः

किमधिगतम्

1. संस्कृतशब्दानाम् अनेकार्थता काव्ये सौन्दर्यं वर्धयति।
2. विविधाः प्रहेलिकाः ज्ञानवर्धनं मनोरञ्जनं च कुर्वन्ति।
3. प्रहेलिकानां पठनेन समाधानकथनेन शब्दकोशे वृद्धिः भवति।
4. पर्यायशब्दानां विलोमशब्दानां च ज्ञानेन लेखनशक्तेः विकासः भवति।
5. प्रहेलिकाः मौखिकवार्तालापे सहायतां कुर्वन्ति।

योग्यता विस्तारः

क. भावविस्तारः

प्राचीन काल से आज तक पहेलियाँ सभी वर्गों के लोगों में मनोरंजन के साथ-साथ बौद्धिक व्यायाम का माध्यम रही है। ऋग्वेद, महाभारत आदि ग्रंथों में दार्शनिक प्रतीकों का पहेली

की भाषा में प्रयोग हुआ है। महाभारत में उत्तंक कुछ विचित्र दृश्यों के बारे में अपने गुरु से प्रश्न करते हैं तो गुरु उन्हें बताते हैं- ''जो दो स्त्रियाँ तुमने देखीं वे धाता और विधाता हैं। वे जिन काले और सफेद धागों से कपड़ा बुन रही थीं वे रात और दिन हैं। बारह अरों से युक्त जिस चक्र को छह कुमार घुमा रहे थे वे संवत्सर हैं। छह कुमार छह ऋतुएं हैं और बारह महीने ही बारह अरे हैं।'' यह रूपक कुछ परिवर्तनों के साथ संसार के प्रायः सभी साहित्यों में मिलता है। कहीं-कहीं संवत्सर की कल्पना एक वृक्ष के रूप में है, जिसके बारह अंग, तीस शाखाएँ और 365 पत्ते हैं जो एक ओर सफेद हैं और दूसरी ओर काले। महाभारत के यक्ष प्रश्न भी पहेली की शैली में ही हैं।

पहेलियों में कहीं दिये हुये लक्षणों के आधार पर उत्तर पूछे जाते हैं तो कहीं श्लेष-प्रयोग पर आधारित विरोधाभासी प्रश्न होते हैं। उदाहरण के लिए, नीचे दी गई प्रहेलिका के प्रथमपाद में सारिका (मैना) के विषय में पूछा गया है-

'सदारिमध्यापि न वैरियुक्ता नितान्तरक्तापि सितैव नित्यम्।
यथोक्तवादिन्यपि नैव दूती का नाम कान्तेति निवेदयन्ति।।'

''वह कौन है जो सदारिमध्या (सदा शत्रुओं के बीच) हो कर भी वैरियों से युक्त नहीं है।'' यहाँ 'सदारिमध्या' का एक दूसरा अर्थ भी है- 'जिसके मध्य में सदा 'रि' अक्षर होता है, वह सदा रिमध्या है। अर्थात् सारिका।' इसी प्रकार अन्य पादों में भी श्लेष का प्रयोग है।

दण्डी के अनुसार क्रीडागोष्ठियों में एवं दूसरों को मोहित करने में प्रहेलिकाओं का उपयोग किया जाता है। प्रहेलिका को चौंसठ कलाओं में भी सम्मिलित किया गया है।

ख. भाषाविस्तारः

(i) शब्दरूपाणि

तमस् (अन्धकार) नपुंसकलिंग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्र.	तमः	तमसी	तमांसि
द्वि.	तमः	तमसी	तमांसि
तृ.	तमसा	तमोभ्याम्	तमोभिः
च.	तमसे	तमोभ्याम्	तमोभ्यः
पं.	तमसः	तमोभ्याम्	तमोभ्यः
ष.	तमसः	तमसोः	तमसाम्
स.	तमसि	तमसोः	तमःसु
संबोधन	हे तमः	हे तमसी	हे तमांसि

टिप्पणी

प्रहेलिका:

इसी प्रकार तपस्, नभस्, सरस्, मनस्, पयस् आदि के रूप बनते हैं।

धातुरूपाणि

बाध् धातु (आत्मनेपदी) लट् लकार

पुरुषा	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्र. पु.	बाधते	बाधेते	बाधन्ते
म. पु.	बाधसे	बाधेथे	बाधध्वे
उ. पु.	बाधे	बाधावहे	बाधामहे

लभ् = पाना (आत्मनेपदी)

लट् लकार

पुरुषा:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्र. पु.	लभते	लभेते	लभन्ते
द्वि. पु.	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उ. पु.	लभे	लभावहे	लभामहे

लृट लकार

प्र. पु.	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
द्वि. पु.	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उ. पु.	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लोट् लकार

प्र. पु.	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
द्वि. पु.	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उ.पु.	लभै	लभावहै	लभामहै

लङ् लकार

प्र.पु.	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
म.पु.	अलभथा:	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उ.पु.	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

टिप्पणी

विधिलिङ्ग लकार

प्र.पु.	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
म.पु.	लभेथा:	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उ.पु.	लभेय	लभेवहि	लभेमहि।

प्रत्यया:

णिनि (इन्) प्रत्यय: यह तद्धित प्रत्यय है। 'शील' आदि से युक्त कर्ता में 'णिनि' प्रत्यय होता है, जिसमें 'ण्' एवं अन्तिम 'इ' (ण् + इ + न् + इ = णिनि)अनुबंध हैं और उनका लोप हो जाता है। इस प्रकार इस प्रकार में केवल 'इन्' बचता है।

सत्यं + वद् + णिनि = सत्य + वद् + इन्, = सत्यवादिन् = सत्यवादी

वह् + णिनि = वह् + इन्, वाहिनी,

शीतल + वह् + णिनि = शीतलवाहिनी

काशी + तल् + वह् + णिनि = काशीतलवाहिनी

टाप् (आ) प्रत्यय – यह स्त्रीत्व का बोधक प्रत्यय है। जब पुँल्लिङ्ग के शब्द से स्त्रीलिङ्ग शब्द को बनाना होता है तब टाप् प्रत्यय लगाया जाता है। 'टाप्' में 'ट्' और 'प्' अनुबंध हैं, अत: इनका लोप हो जाता है। केवल आ शेष रह जाता है। जैसे–

शान्त + टाप् (आ) = शान्ता

वन्द्य + टाप् (आ) = वन्द्या

अज + टाप् (आ) = अजा

अश्व + टाप् (आ) = अश्वा

बाल + टाप् (आ) = बाला

ङीप् (ई) प्रत्यय – यह भी स्त्रीत्व बोधक प्रत्यय है। अकारान्त शब्दों से भी यह प्रत्यय किया जाता हे यदि वे टित् हों या उनके अन्त में ढ, अण्, अञ्, द्वयसज्, दघ्नञ्, आदि तद्धित प्रत्यय किए गये हों। 'ङीप्' में 'ङ्' और 'प्' अनुबंध हैं, जिनका लोप हो जाता है और मात्र 'ई' बच जाता है। जैसे–

कर्तृ + ङीप् = कर्त्री (करने वाली)

दातृ + ङीप् = दात्री (देनेवाली)

दण्डिन् + ङीप् = दण्डिनी (लाठी वाली)

गुणिन् + ङीप् = गुणिनी (गुणवाली)

टिप्पणी

प्रहेलिकाः

नद + ङीप = नदी

नर + ङीप् = नारी इत्यादि

पाठान्तप्रश्नाः

उचितम् उत्तरं चीयताम्-

1. (i) कृष्णः कं जघान?

(क) महिषासुरम् (ख) मारीचम् (ग) घटोत्कचम् (घ) कंसम्

(ii) कः हर्षम् उपागतः?

(क) कौरवाः (ख) केशवः (ग) द्रोणः (घ) शृगालः

(iii) शूलपाणिः इति कः कथ्यते?

(क) विष्णुः (ख) शिवः (ग) इन्द्रः (घ) सूर्यः

(iv) जयन्तः कस्य सुतः?

(क) लक्ष्म्याः (ख) रामस्य (ग) इन्द्रस्य (घ) वरुणस्य

2. उत्तराणि दीयन्ताम्-

(i) पद्मानि कः प्रबोधयति? ....

(ii) सर्वदेवानां वन्द्यः कः अस्ति? ....

(iii) कं जनं शीतं न बाधते? ....

(iv) विद्वद्भिः सदा वन्द्या का? ....

(v) सीतायाः पतिः कः आसीत्? ....

(vi) सूर्यः कं नाशयति? ....

(vii) शिवस्य कति नेत्राणि भवन्ति? ....

(viii) इन्द्रपुत्रस्य किं नाम अस्ति? ....

टिप्पणी

3. **अधोलिखितेषु क्रियापदेषु यथोचितैः धातु/लकार/पुरुष/वचनैः रिक्तस्थानानि पूर्यन्ताम्-**

(क) जानाति = ... धातुः + लट्लकारः + प्रथमपुरुषः एकवचनम्

(ख) रुदन्ति = रुद् + ... लकारः + प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

(ग) प्रबोधयति = प्र + ... धातुः + णिच् + प्रथमपुरुषः एकवचनम्

(घ) स्यात् = अस् + ... लकारः + प्रथमपुरुषः + ... वचनम्।

4. **कोष्ठे प्रदत्तानां शब्दानां समुचितप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत-**

(i) शिरोवेदना मां ..... । (बाध्)

(ii) केरलप्रदेशे ..... जनानां सर्वाधिका संख्या वर्तते। (साक्षर)

(iii) सरोवरे ..... विकसति। (पद्म)

(iv) विद्यया एव सर्वे जनाः .....। (वृध्)

(v) सिंहः गजान् .....। (हन्)

(vi) ..... जलं शीतलं भवति। (गङ्गा)

5. **अधोलिखितविषयान् आधारीकृत्य एकैकं वाक्यं लिखत-**

(i) गङ्गा .....

(ii) पत्रम् .....

(iii) नारिकेलम् .....

(iv) विद्या .....

(v) कृष्णः .....

उत्तराणि

बोधप्रश्नाः

1. क + 4, ख + 5, ग + 6, घ + 1, ङ + 2, च + 3

टिप्पणी

प्रहेलिका:

2. (i) न च शूलपाणि: (ii) सदा वन्द्या, (iii) भोजनान्ते च (iv) स्फुटवक्ता च, पण्डित: (v) सर्वदेवानाम्।

पाठगतप्रश्ना: 10.1

1. (i) रुदन्ति (ii) जलम् (iii) मृत्युञ्जय: (iv) सूर्य: (v) सज्जना:

2. अ + (iii) , आ + (v) , इ + (i) , ई + (vi) , उ + (iv) , ऊ + (vii) , ऋ + (ii)

पाठगतप्रश्ना: 10.2

1. (i) भोजनस्य, (ii) जयन्तस्य, (iii) विष्णुपदम्, (iv) कृष्ण:, (v) शीतम्, (vi) विद्वद्भि:

2. (i) काशीतलवाहिनी, (ii) केदारपोषणरता:, (iii) कम्बलवन्तम्, (iv) शान्ता, (v) गुणोत्तम:

पाठान्तप्रश्ना:

1. (i) कंसम् (ii) द्रोण:, (iii) शिव:, (iv) इन्द्रस्य

2. (i) सूर्योदय:, (ii) शिव:, (iii) कम्बलवन्तम् (iv) विद्या (v) राम:, (vi) अन्धकारम् (vii) त्रीणि, (viii) जयन्त:,

3. (क) ज्ञा, (ख) लट् (ग) बुध् (घ) विधिलिङ्, एकवचन

4. (i) बाधते, (ii) साक्षराणाम्, (iii) पद्मानि, (iv) वर्धन्ते, (v) हन्ति, (vi) गंगाया:

5. कानिचित् वाक्यानि यथा–

   (i) गंगाया: जलं पवित्रं भवति।

   (ii) अपद्म अणि पत्रं दूरं गच्छति।

   (iii) नारिकेलं मधुरं जलं धारयति।

   (iv) विद्या सर्वदा पूज्यते।

   (v) कृष्ण: कंसम् अमारयत्।